संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -246 रविवार ,07 जुलाई 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

घटती-घटना अखबार में स्वास्थ्य मंत्री के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री संजय मरकाम व उनके भतीजे प्रभारी डीपीएम प्रिंस जायसवाल की कमियों की छप रही खबर को रोकने के लिए स्वास्थ्य मंत्री ने छत्तीसगढ़ जनसंपर्क विभाग के आयुक्त सहसंचालक आइपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव को किया आगे ?

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री विश्वभूषण हरिचंदन से हस्तक्षेप की मांग...

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव साहब ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

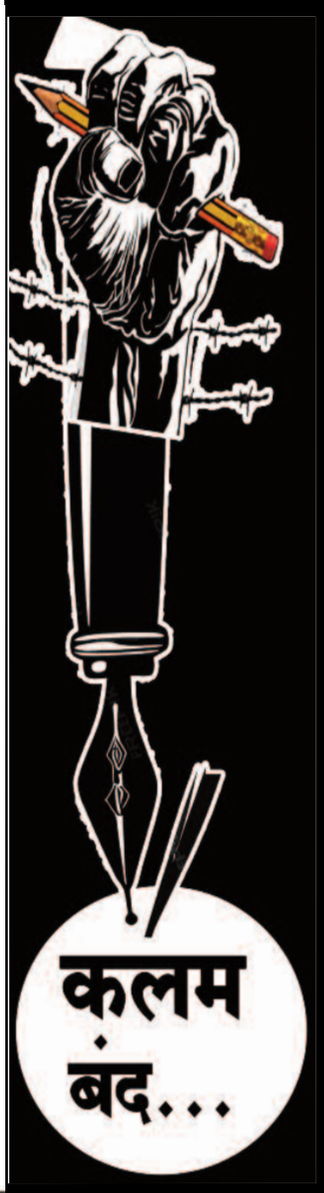

कलम बंद...का सातवां दिन

?

कलम बंद...का सातवां दिन

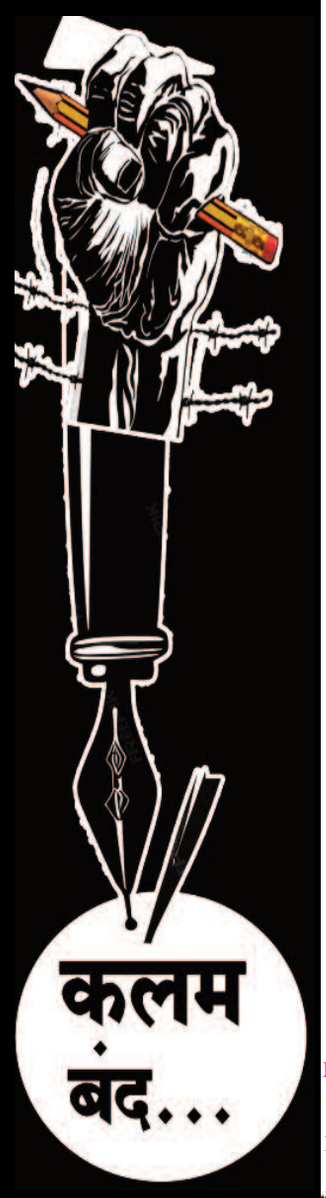

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

संपादकीय

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री अपने दागी विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी व अपने भतीजे प्रभारी डीपीएम सूरजपुर के लिए लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को दबाने का कर रहे प्रयास ?

» स्वास्थ्य मंत्री के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी व भतीजे प्रभारी डीपीएम सूरजपुर की खबर प्रकाशन से नाराज हैं स्वास्थ्य मंत्री ?

» स्वास्थ्य मंत्री अपने विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के दिव्यांग प्रमाण पत्र की नहीं करा पा रहे जांच जिसकी कांग्रेस शासनकाल से ही हो रही मांग...

» स्वास्थ्य मंत्री अपने भतीजे प्रभारी डीपीएम सूरजपुर को जांच से बचाने के प्रयास में अपनी फजीहत भी कराने को तैयार...अखबार पर दबाव बनाने को तैयार...पर जांच कराने को क्यों तैयार नही ?

» घटती-घटना अखबार में स्वास्थ्य मंत्री के कर्तव्यस्थ अधिकारी व उनके भतीजे प्रभारी डीपीएम की कमियों की छप रही खबर को रोकने के लिए स्वास्थ्य मंत्री ने छत्तीसगढ़ जनसंपर्क अधिकारी को किया आगे ?

» सुरजपुर के प्रभारी डीपीएम पहले थे कोरिया जिले के प्रभारी डीपीएम,कांग्रेस शासनकाल में इन्होंने किया है जमकर भ्रष्टाचार:सूत्र...

» भाजपा शासनकाल में होनी थी जांच लेकिन स्वास्थ्य मंत्री के निकल गए भतीजे इसलिए अब नहीं होगी जांच ?

» विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी और भतीजे प्रभारी डीपीएम से स्वास्थ्य मंत्री का ऐसा मोह की प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था और सरकार की छवि और उसकी विश्वसनीयता का भी उन्हें ख्याल नहीं ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

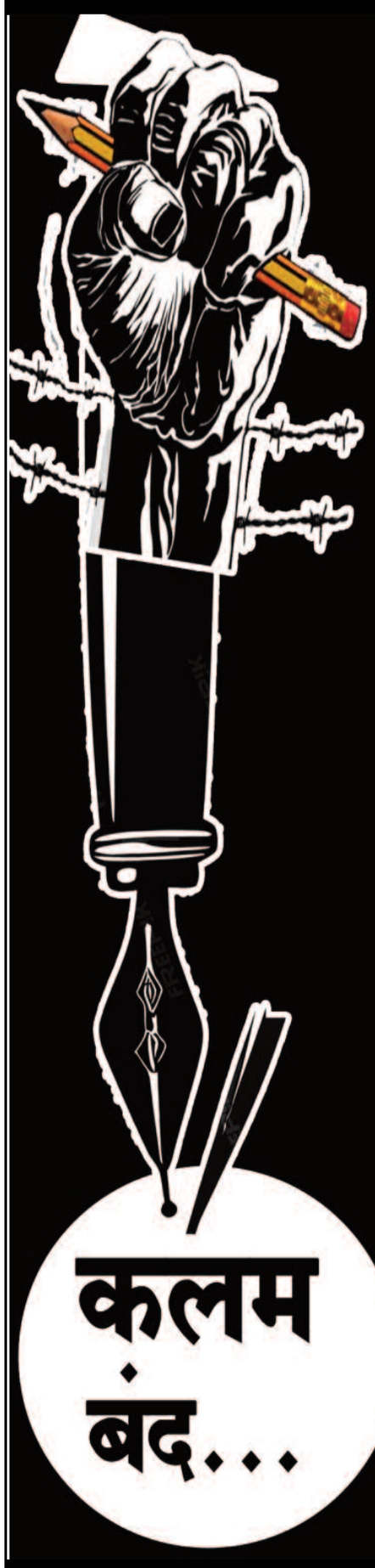

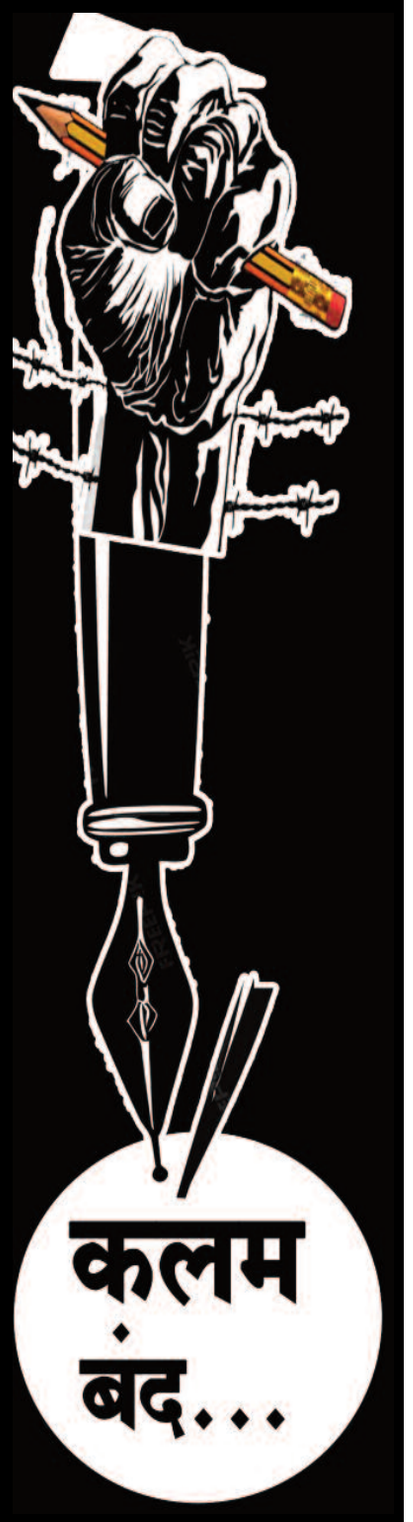

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

क्या प्रकशित करें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी ?

अम्बिकापुर,06 जुलाई 2024(घटती-घटना)। आपको जो कमियां दिखाई जा रही हैं...वह आपको पसंद नहीं आ रही हैं...आपके विभाग में कितनी कमियां हैं...यह शायद आपको दिख नहीं रहा और अखबार आपको दिखाना चाह रहा है...वह देखना नहीं चाहते ऐसे में क्या प्रकाशित करें..यह आपकी तय करें ? अखबार जो आपको कमियां दिख रहा है उस कमियों को आपको दूर करना था पर उसे कर्मियों को दूर करने के बजाय आप अखबार से पत्रकार से संपादक से आपको दिक्कत हो रही फिर आप यह समझिए कि आपसे जनता को कितनी दिक्कतें हो रही होंगी ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

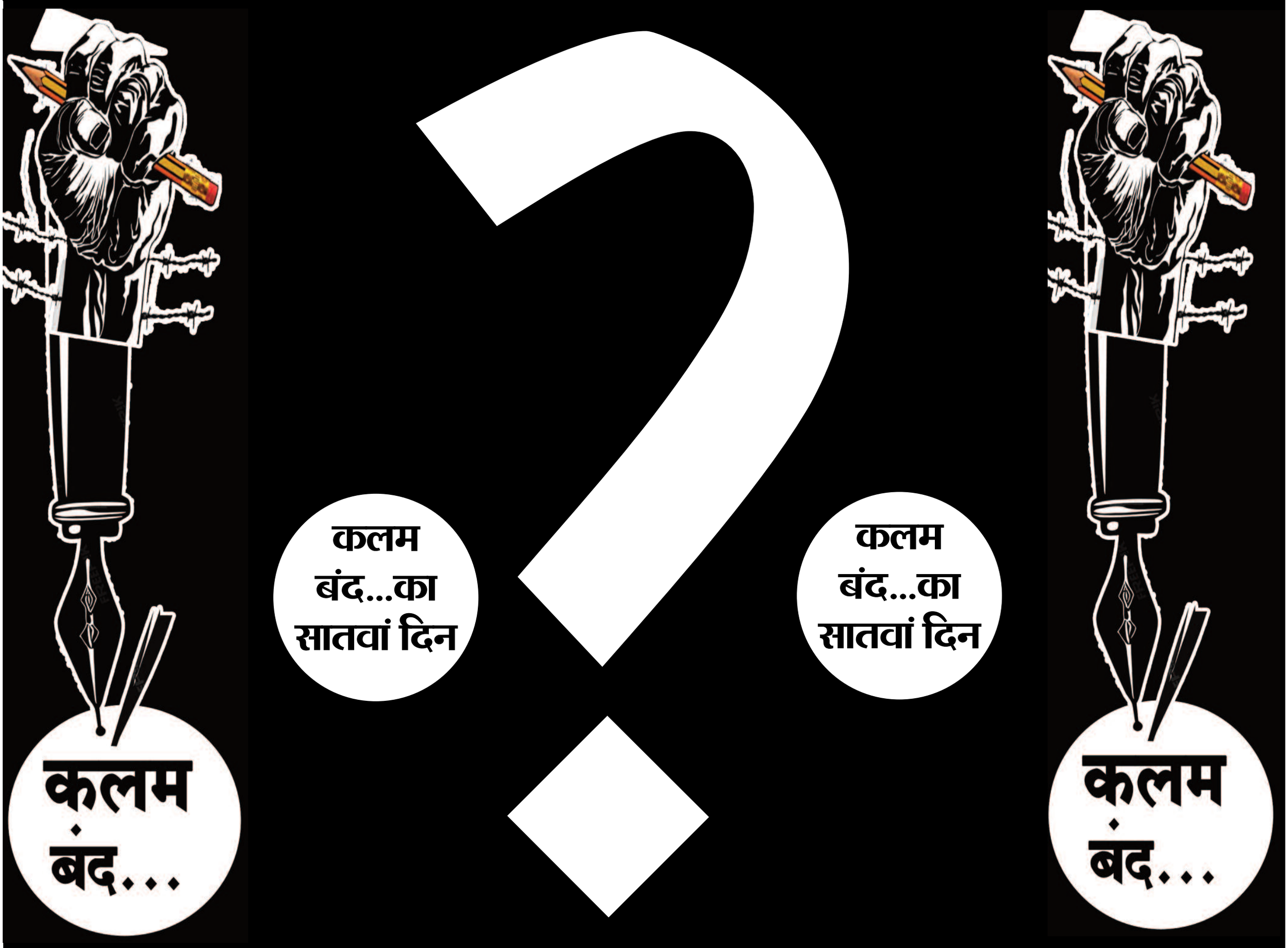

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

CMYK

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध ?

अम्बिकापुर,06 जुलाई 2024 (घटती-घटना)। माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है...छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है...केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है...पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है...यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है...जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री,विधायक बे-लगाम हो चुके हैं...उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं...उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...और बताएं की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें ?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

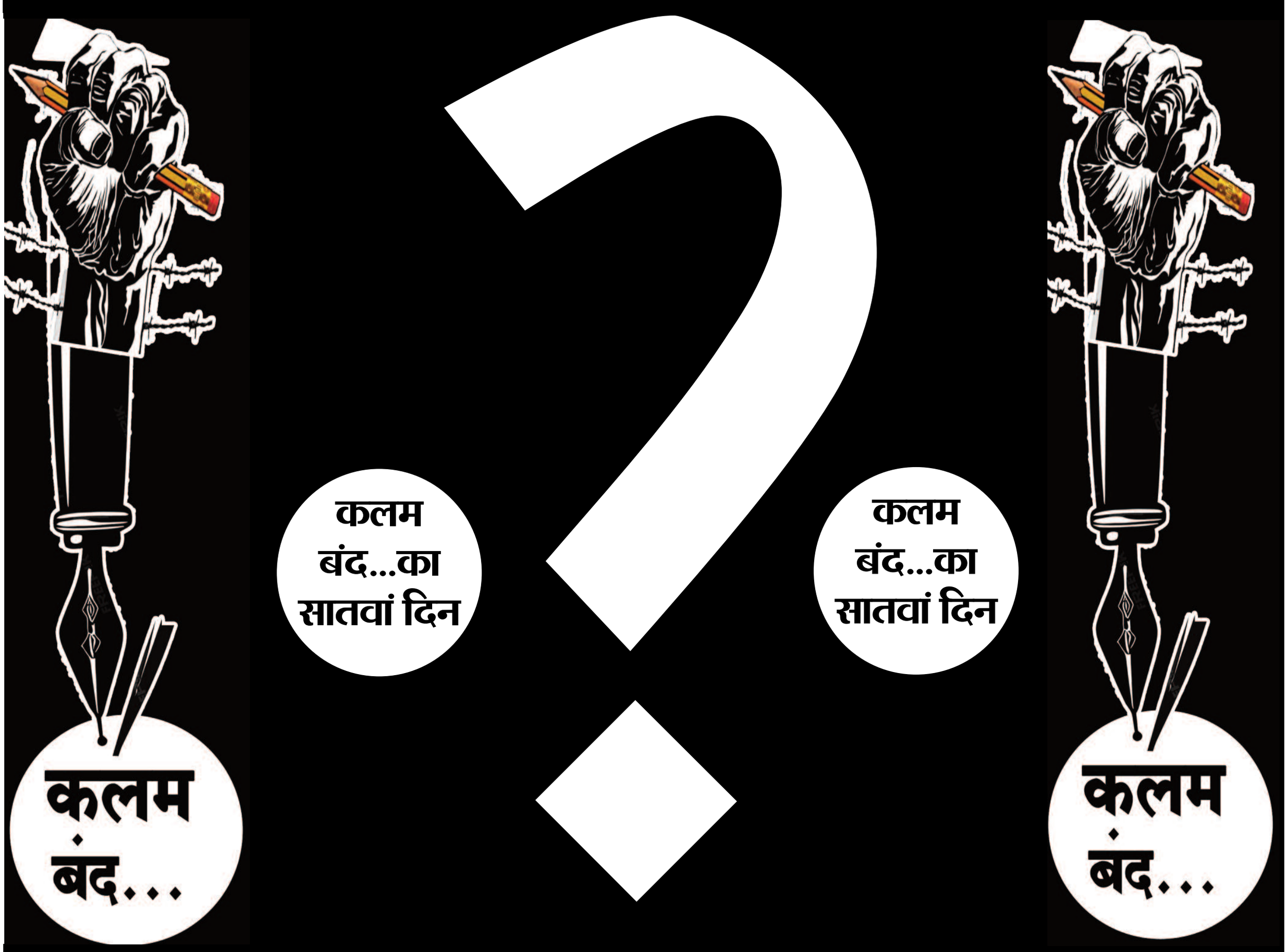

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

CMYK

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है ?

अम्बिकापुर,06 जुलाई 2024(घटती-घटना)। भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है...इन दिनों...कुछ को छोड़कर...हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है...नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे...इसके कारण,अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता हैं...दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है...देश और दुनिया को डरा दिया है...वहीं,पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है...जो पत्रकार देश और उसके आम नागरिकों के लिए लिखे वे मरे या प्रताड़ित हुए सरकारी तंत्रों के द्वारा...!

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

?

कलम बंद...का सातवां दिन

कलम बंद...का सातवां दिन

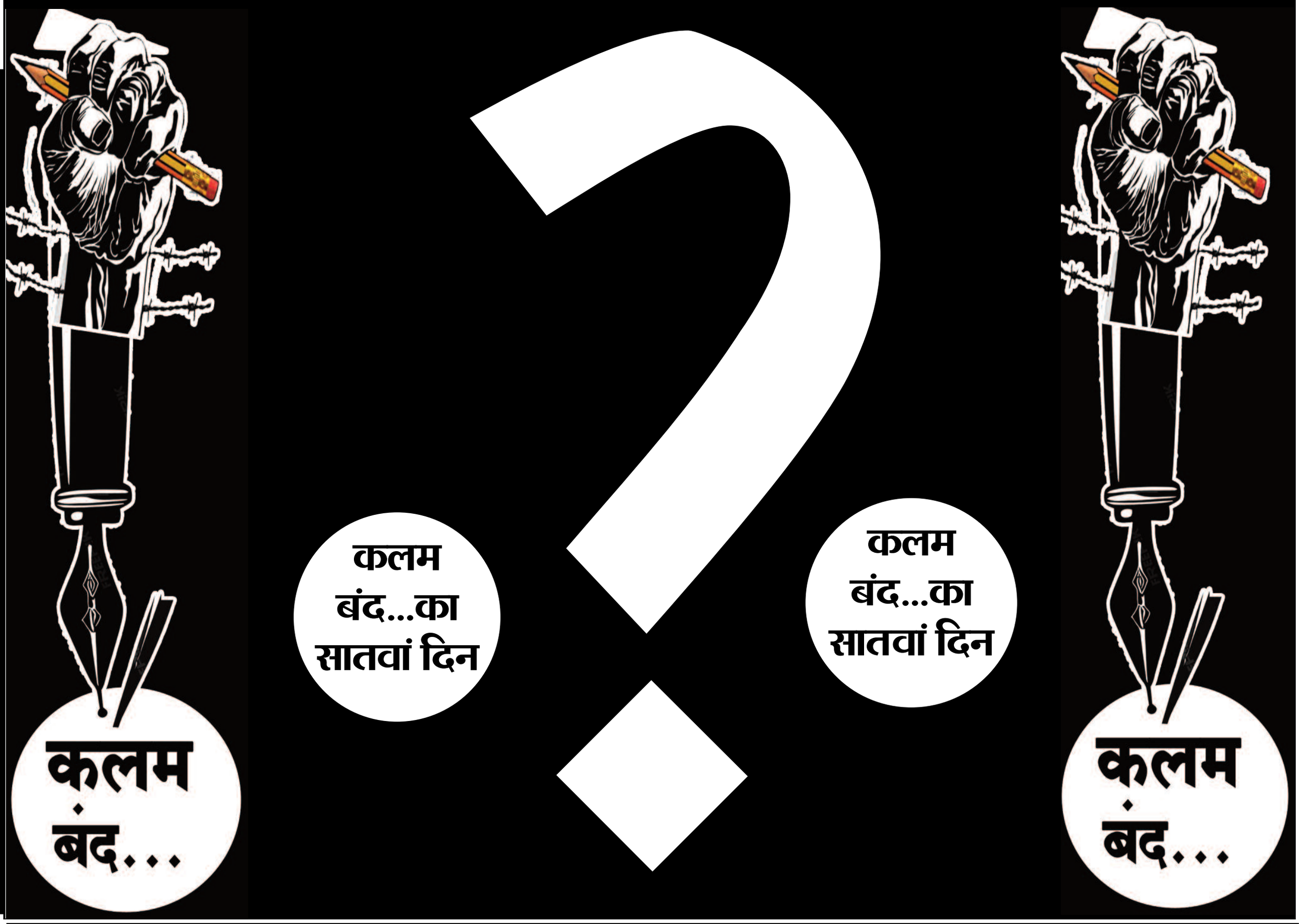

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

CMYK

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार?

» भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...
» कमी दिखाओ तो दिक्कत...
» जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत...

अम्बिकापुर,06 जुलाई 2024(घटती-घटना)। आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं,भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र।

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

संक्षिप्त खेल समाचार

कारुआना ने जीता खिताब

प्रज्ञाननंदा और गुकेश टाईब्रेकर में हारे...

बुखारेस्ट,06 जुलाई 2024। भारत के आर प्रज्ञाननंदा और डी गुकेश को चार खिलाड़ियों के बीच खेले गए टाइब्रेकर में हार का सामना करना पड़ा जिसमें दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारुआना ने तीनों रैपिड गेम जीतकर सुपरबेट क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। कारुआना क्लासिकल प्रारूप में नीदरलैंड के अनीश गिरी से हार गए, जिससे मुकाबला रोचक बन गया क्योंकि गुकेश, प्रज्ञाननंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा सभी उनकी बराबरी पर पहुंच गए।

भांबरी-ओलिवेटी की जोड़ी विंबलडन से हुई बाहर

नई दिल्ली,06 जुलाई 2024। भारत के युकी भांबरी और फ्रांस के उनके जोड़ीदार अल्बानो ओलिवेटी जर्मनी के केविन क्राविएट्ज़ और टिम पुएट्ज़ से तीन सेटों में हारने के बाद विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल के दूसरे दौर से बाहर हो गए।भांबरी और ओलिवेटी की जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की और पहला सेट जीतकर बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए और आठवीं वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी से 2 घंटे 5 मिनट तक चले मैच में6-4 4-6 3-6 से हार गए।भांबरी और ओलिवेटी ने पहले दौर में कजाखस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और अलेक्जेंडर शेवचेंको को हराया था। भारत की निगाहें अब रोहन बोपन्ना पर टिकी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी बनाई है।

22 साल के भारतीय खिलाड़ी प्रियांशु कनाडा ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे

» दर्ज की करियर की सबसे बड़ी जीत

नई दिल्ली,06 जुलाई 2024। 22 साल के प्रियांशू राजावत कनाडा ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट में कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। वह खेल से सभी को प्रभावित करने में सफल रहे हैं। अब उन्होंने एक बड़ा कमाल कर दिया है। उदीयमान खिलाड़ी प्रियांशु राजावत ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए शीर्ष वरीय और दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी डेनमार्क के एंडर्स एंटोनसेन को हराकर सेमीफाइनल में जगह पक्की कर ली है। उन्होंने एंटोनसेन को कड़ी टक्कर दी और आखिरकार मैच में भी बाजी मार ली।

प्रियांशु राजावत ने कनाडा ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट में एंडर्स एंटोनसेन को चारों खाने चित कर दिया। विश्व में 39वें नंबर के खिलाड़ी राजावत ने शुक्रवार रात एक घंटे 19 मिनट तक चले क्वार्टर फाइनल मैच में एंटोनसेन को 21-11, 17-21, 21-19 से हराया। राजावत ने एंटोनसेन को हराकर अपने करियर की सबसे बड़ी जीत दर्ज की। यह पहला अवसर है जबकि इस 22 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी ने शीर्ष 10 में शामिल किसी खिलाड़ी को हराया।

दूसरी बार सुपर-500 टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे

प्रियांशु राजावत दूसरी बार विश्व

टूर सुपर 500 टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे हैं जहां उनका सामना फ्रांस के अलेक्स लेनियर से होगा। राजावत ने अच्छी शुरुआत की तथा पहले गेम में एक समय वह 7-4 से आगे थे। एंटोनसेन ने हालांकि जल्द ही स्कोर 9-9 से बराबर कर दिया। भारतीय खिलाड़ी ने इसके बाद लगातार पांच अंक बनाए। एंटोनसेन ने फिर वापसी की कोशिश की लेकिन राजावत ने लगातार सात अंक बनाकर पहला गेम अपने नाम कर दिया।

आखिरी गेम में किया कमाल

एक समय स्कोर 17-17 तक बराबरी पर था लेकिन डेनमार्क के खिलाड़ी ने लगातार चार अंक बनाकर मैच को निर्णायक गेम तक खींच दिया। तीसरे गेम में राजावत एक समय 5-1 से आगे थे लेकिन एंटोनसेन इंटरवल तक 11-10 मामूली बढ़त हासिल करने में सफल रहे। इसके बाद दोनों खिलाड़ियों ने एक दूसरे को कड़ी चुनौती दी लेकिन राजावत ने 19-19 के स्कोर पर लगातार दो अंक बनाकर मैच अपने नाम कर दिया। राजावत ने इससे पहले भी अपने से बेहतर रैंकिंग वाले खिलाड़ियों को हराया था। उन्होंने डेनमार्क के विश्व में 24वें नंबर के खिलाड़ी रासमस गेम्के और 33वें स्थान पर काबिज जापान के ताकुमा ओबैयाशी को पराजित करके क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया था।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 'करो या मरो' वाले दूसरे टी 20 में वापसी करना चाहेगी भारतीय महिला टीम

चेन्नई, 06 जुलाई 2024। भारतीय महिला टीम पहले मैच में 12 रन से मिली हार के बाद रविवार को यहां दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैच की श्रृंखला में वापसी करने के लिए दूसरे टी 20 अंतरराष्ट्रीय मैच में बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण में सुधार करना चाहेगी।

भारत को शुक्रवार को हुए पहले मैच में कैच छूटने और बल्लेबाजों के खराब प्रदर्शन का खामियाजा भुगतना पड़ा जिससे टीम दक्षिण अफ्रीका के चार विकेट पर 189 रन के जवाब में 20 ओवर में चार विकेट पर 177 रन ही बना सकी। शुक्रवार के मैच के बाद दोनों टीमों के लिए कुछ चिंतायें बनी हुई हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के बयान के अनुसार ऋचा को कैच लेने में असफल रहने के बाद गर्दन में दर्द और चक्कर आया जिससे यह गेंद उनके चेहरे पर लगी। बीसीसीआई के बयान के

अनुसार, ''उन्हें स्कैन के लिए भेजा गया है और बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी प्रगति पर नजर रख रही है।'

ब्रिट्स को अपने दाहिने पैर के निचले हिस्से में गंभीर चोट के कारण स्ट्रेचर पर मैदान से बाहर ले जाना पड़ा। हालांकि वह मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में आई थी और उन्होंने पुष्टि की कि वह आगामी मैचों में खेलने के लिए तैयार हैं। मेजबान टीम के लिए उनका गेंदबाजी प्रदर्शन अच्छा रहा लेकिन खराब क्षेत्ररक्षण ने चिंता बढ़ा दी जिसमें तीन कैच छूटे और कुछ गलत क्षेत्ररक्षण हुआ।खिलाड़ियों के दिमाग में क्षेत्ररक्षण में 'फ्लॉप शो' जरूर चल रहा रहेगा। विशेषकर पर तब जब मुख्य कोच कोच अमोल मजूमदार इस मामले में बेहद सख्त हैं। स्मृति मंधाना को छोड़कर भारत के बाकी बचे बल्लेबाजी शीर्ष क्रम को और बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है।कप्तान हरमनप्रीत कौर और जेमिमा रोड्रिग्स की बदौलत हालांकि भारतीय मध्यक्रम प्रभावी रहा है जिन्होंने शुक्रवार को क्रमशः 35 और नाबाद 53 रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका ने बल्लेबाजी में विशेषकर शीर्ष क्रम ने अच्छा प्रदर्शन किया।

टीम इस प्रकार हैं:

भारत महिला:

हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), उमा छेत्री (विकेट कीपर), ऋचा घोष (विकेट कीपर), दयालन हेमलता, जेमिमा रोड्रिग्स, शैफाली वर्मा, अमनजोत कौर, श्रेयंका पाटिल, सजीवन सजाना, दीप्ति शर्मा, आशा शोभना, अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह, शबनम शकील, पूजा वस्त्रकार और राधा यादव।

दक्षिण अफ्रीका महिला

लौरा वोल्वार्ड्ट (कप्तान), तज़मिन ब्रिट्स, मीके डी रिडर (विकेट कीपर), सिनालो जाफ्ता (विकेट कीपर), एनेके बॉश, नादिन डी क्लार्क, एनेरी डर्कसेन, मारिजान कप्प, सुने लुस, क्लो ट्रायोन, अयाबोंगा खाका, मसाबाटा क्लास, एलिज़-मारी मार्क्स, नॉनकुलुलेको म्लाबा और तुमी सेखुखुने।

मैच भारतीय समयानुसार शाम सात बजे शुरू होगा।

लंदन टूर्नामेंट में संयुक्त 14 वें स्थान पर रही दीक्षा डागर

लंदन, 06 जुलाई 2024। भारत की दीक्षा डागर तीसरे और अंतिम दौर के 16वें होल में ट्रिपल बोगी कर बैठी, जिससे वह अरामको टीम सीरीज लंदन गोल्फ टूर्नामेंट में शीर्ष 10 में जगह नहीं बना पाई ।पेरिस ओलंपिक में खेलने की तैयारी में लगी दीक्षा ने अंतिम दौर में दो ओवर 75 का कार्ड खेला जिससे वह 14वें स्थान पर रही। यह भारतीय खिलाड़ी एक समय शीर्ष पांच में जगह बनाने की स्थिति में दिख रही थी लेकिन आखिर में की गई गलती उन्हें भारी पड़ी। कट में जगह बनाने वाली एक अन्य भारतीय खिलाड़ी त्वेसा मलिक (75) संयुक्त 48वें स्थान पर रही जबकि प्रणवी उर्स पहले दौर के बाद हट गई थी।

लेओना मैगुएर लेडीज यूरोपियन टूर (एलईटी) पर जीतने वाली पहली आयरिश महिला बनीं। उन्होंने पहले से लेकर अंतिम दौर तक बढ़त बनाए रखी थी।

अनंत-राधिका के संगीत में नीता और मुकेश अंबानी के डांस के आगे सलमान-रणबीर भी पड़े फीके, बेटे-बहू संग जमाया रंग

देश के नामी बिजनेसमैन मुकेश अंबानी और नीता अंबानी ने अपने बेटे अनंत अंबानी की संगीत सेरेमनी में परफॉर्म किया। उन्होंने अपने चारों पोते-पोतियों के साथ दिल छू लेने वाली परफॉर्मेंस दी, जिसका वीडियो अब इंटरनेट पर खूब वायरल हो रहा है। दोनों बच्चों के साथ एक कार में सवार दिखाई दे रहे हैं और मोहम्मद रफी के गाने पर परफॉर्म कर रहे हैं। साल 1968 में फिल्म आई थी ब्रह्मचारी। इसमें शम्मी कपूर अहम भूमिका में थे। इसका ही गाना था, चक्के पे चक्का, जिस पर मुकेश अंबानी और नीता अंबानी लिप-सिंक करते हुए एक पुरानी खुली छत वाली कार चलाते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनके पोते-पोतियां- पृथ्वी, आदिया, कृष्णा और वेद- कार में गुब्बारों से खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

पोते-पोतियों के साथ मुकेश-नीता का वीडियो

मुकेश और नीता अंबानी के पोते-पोतियों में आकाश अंबानी और श्लोका मेहता के बच्चे पृथ्वी और वेद, तथा ईशा अंबानी और आनंद पीरामल के जुड़वां बच्चे कृष्णा और आदिया शामिल हैं। इनके अलावा एक और वीडियो सामने आया है, जिसमें पूरा परिवार स्टेज पर शाहरुख खान की फिल्म के गाने ओम शांति ओम के टाइटल ट्रैक पर खूबसूरत डांस करता नजर आ रहा है।

12 जुलाई को होनी है राधिका-अनंत की शादी

शुरुआत मुकेश-नीता अंबानी के बड़े बेटे और दामाद करते हैं। फिर स्टेज पर बेटी और बहू की एंट्री होती है। नीता आती हैं,मुकेश आते हैं। और अंत में आते हैं अनंत और राधिका। ये सभी ऐसा डांस करते हैं कि देखकर चेहरे खिल उठते हैं। बता दें कि इनकी शाजी 12 जुलाई को होनी है लेकिन 2 जुलाई से ही शादी से जुड़ी रस्में हो रही हैं।

टीएमके ओसीएच की सोनू शादी से पहले मंगेतर के साथ हुई कोजी

होने वाले पति की बाहों में ऐसे बीती झील मेहता की शाम

हिट और सबसे लंबे समय तक चलने वाले सिटकॉम तारक मेहता का उल्टा चश्मा में सोनू भिड़े की भूमिका निभाने के बाद से झील मेहता टीवी जगत में फेमस रही हैं। उनके निजी जीवन के बारे में बात करें तो एक्ट्रेस जल्द ही अपने मंगेतर आदित्य दुबे से शादी करने के लिए तैयार हैं। शादी के बंधन में बंधने से पहले, झील और आदित्य ने साथ में अच्छा वक्त बिताया और उन्हें नाइट डेट पर कोजी होते देखा गया।

झील मेहता ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर मंगेतर आदित्य के साथ अपनी पूल साइड डेट की कुछ तस्वीरें शेयर कीं। पूल साइड सेटअप से लेकर प्यार में डूबे पलों तक, झील की यह पोस्ट कपल गोल्स दे रही है। झील और आदित्य प्यार में खो गए हैं। उन्हें साथ में रोमांटिक टाइम स्पेंड करते हुए देखा जा सकता है। पिंक आउटफिट में एक्ट्रेस बेहद खूबसूरत लग रही हैं। इस पोस्ट को सोशल मीडिया पर अपने फैंस और फॉलोअर्स के साथ शेयर करते हुए झील ने लिखा, मानसिक रूप से, मैं यहां हूं।

झील मेहता की रोमांटिक डेट

झील मेहता और आदित्य दुबे अपने कॉलेज के दिनों से ही एक-दूसरे से प्यार करते हैं। वह अक्सर अपने सोशल मीडिया पर आदित्य के साथ भावुक तस्वीरें पोस्ट करती थीं। हालांकि, जनवरी 2024 में, झील को उनके बॉयफ्रेंड ने प्रपोज किया और दोनों ने सगाई कर ली। एक्ट्रेस को आंखों पर पट्टी बांधकर लाया गया और आदित्य ने डांस किया और फिर शाहरुख खान स्टाइल में उन्हें प्रपोज किया।

तारक मेहता... में 4 साल काम किया

बाद में, झील ने भी मई 2024 में आदित्य को प्रपोज करने की प्लानिंग की। %तारक मेहता का उल्टा चश्मा% में सोनालिका भिड़े उर्फ सोनू (माधवी और आत्माराम भिड़े की बेटी) की भूमिका निभाने के बाद झील मेहता एक घरेलू नाम बन गईं। जब सिटकॉम की शुरुआत हुई तब वो एक बाल कलाकार थीं। वह चार साल से अधिक समय तक इस शो का हिस्सा रहीं और उनकी परफॉर्मेंस के लिए उनकी खूब सराहना भी की गई।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)अंबिकापुर,जिला-सरगुजा(छ0ग0)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र. अ-2/2023-23

एतद द्वारा सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक निशांत विजय अग्रवाल आ0 पवन कुमार अग्रवाल जाति अग्रवाल, निवासी सदर रोड अंबिकापुर, तहसील अंबिकापुर, जिला-सरगुजा (छ0ग0) के द्वारा अपने स्वामित्व एवं आधिपत्य की भूमि स्थित ग्राम-अंबिकापुर तहसील अंबिकापुर जिला-सरगुजा (छ0ग0) खसरा नं0 2801/3 रकबा 0.101 हे0 भूमि को कृषि भिन्न व्यावसायिक प्रयोजन हेतु व्यपवर्तन कराने के लिए भूमि की बी-1 खसरा भूमि उपयोगिता प्रमाण पत्र ले-आउट रजिस्ट्री की प्रति आदि संहित आवेदन प्रस्तुत किया है जो इस न्यायालय में विचाराधीन हैं।

अतएव उक्त सम्बंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो निधारित सुनवाई तिथि दिनांक 20/07/2024 को मेरे न्यायालय में अथवा अधीक्षक भू-अभिलेख के कार्यालय में स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकता हैं। निधारित समयावधि के पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 04/07/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी।

सील

अनुविभागीय अधिकारी (रा.) अंबिकापुर

क्या घातक परिणाम की जिम्मेदारी लेंगी सामंथा रुथ प्रभु ?

एक्ट्रेस के हेल्थ वाले नुस्खे पर भड़कीं ज्वाला गुट्टा

सामंथा रुथ प्रभु ने हाल ही एक हेल्थ से संबंधित पोस्ट किया था, जिसमें उन्होंने वायरल इंफेक्शन के इलाज के हाइड्रोजन पेरोक्साइड के इस्तेमाल का तरीका बताया था। लेकिन इस वजह से सामंथा लोगों के निशाने पर आ गई हैं। जहां एक डॉक्टर ने सामंथा को अनपढ़ बताते हुए उन्हें जेल भेजने की सलाह दे डाली, वहीं अब बेडमिंटन खिलाड़ी और तमिल फिल्म एक्टर विष्णु विशाल की पत्नी ज्वाला गुट्टा ने सामंथा पर निशाना साधा है। ज्वाला गुट्टा ने सवाल किया है कि इलाज का जो तरीका सामंथा ने बताया है, क्या वह उसके घातक परिणाम की जिम्मेदारी लेंगी?मालूम हो कि सामंथा रुथ प्रभु ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया था कि जब वायरल इंफेक्शन हो तो किसी दवाई के बजाय डिस्टिल्ड वॉटर में हाइड्रोजन पेरोक्साइड मिलाकर नेबुलाइजर के तौर पर इस्तेमाल करना चाहिए। इस पोस्ट को देख डॉ. एबी फिलिप्स ने उन्हें निशाने पर ले लिया और कहा कि वह गंवार और अनपढ़ हैं और जेल भेज देना चाहिए। सामंथा ने हालांकि अपने पोस्ट पर सफाई दी और डॉक्टर को भी जवाब दिया, पर अब ज्वाला गुट्टा ने उनसे सवाल किया है।

ज्वाला गुट्टा का सवाल- क्या सामंथा घातक परिणाम की जिम्मेदारी लेंगी?

ज्वाला गुट्टा ने एक्स पर लिखा, उस सिलेब्रिटी से मेरा एकमात्र सवाल है, जो बड़ी संख्या में लोगों को दवा लिख रहा है, और लोग उसे फॉलो कर रहे हैं। मैं मानती हूं कि नीयत मदद करने की है, लेकिन बस ये बता दो कि अगर नुस्खा काम नहीं करता है और कोई घातक परिणाम होता है, तो क्या आप उसकी जिम्मेदारी लोगी? आपने जिस डॉक्टर को टैग किया है, क्या वह भी जिम्मेदारी लेगा?

सामंथा की सफाई- अच्छी नीयत से दिया था सुझाव

सामंथा रुथ प्रभु ने कुछ दिन पहले ही इंस्टाग्राम स्टोरी पर हाइड्रोजन पेरोक्साइड नेबुलाइजन के इस्तेमाल पर पोस्ट किया था। इस पर डॉ. फिलिप्स ने लंबा-चौड़ा पोस्ट लिखकर सामंथा को फटकारा और कहा था कि इसका इस्तेमाल सेहत के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। सामंथा ने जवाब में पोस्ट किया था कि उन्होंने अच्छी नीयत से यह सुझाव दिया था और उन्हें जिस डॉक्टर ने यह बताया वह मेडिकल प्रोफेशनल हैं और 25 साल से डीआरडीओ में हैं।

मुझे तुम पर तरस आता है देवोलीना भट्टाचार्जी ने किया पायल मलिक पर पलटवार,कहा-मेरा पति मुस्लिम,पर वफादार है...

पायल मलिक ने बिग बॉस ओटीटी 3 से बाहर आने के बाद देवोलीना के बहुविवाह वाले पोस्ट पर करारा जवाब दिया था। जिसके बाद अब देवोलीना भट्टाचार्जी ने भी पलटवार किया है। पायल ने जहां एक्ट्रेस के दूसरे धर्म में शादी करने के बाद हुई आलोचना का जिक्र किया था। वहीं, एक्ट्रेस ने कहा है कि उनके पति वफादार हैं। वह बहुविवाह का समर्थन नहीं करते हैं।

देवोलीना ने अरमान मलिक की शादी की आलोचना की थी। हाल ही में, पायल के एविक्शन के बाद, उनसे देवोलीना के विचारों पर प्रतिक्रिया मांगी गई थी, जिसके बाद उन्होंने कहा कि देवोलीना को उनके रिश्ते पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है, साथ ही उन्होंने शहनवाज से शादी करने के लिए देवोलीना के खुद के आलोचनाओं का सामना करने के अनुभवों की ओर इशारा किया था।

देवोलीना ने पायल मलिक को दिया जवाब

अब देवोलीना ने फिर से लंबा-चौड़ा पोस्ट किया है और पायल को जवाब दिया है। उन्होंने लिखा, एक व्यक्ति को दूसरे धर्म में शादी और बहुविवाह की तुलना करने के लिए हायर लेवल के ज्ञान की जरूरत होती है, जिसके बारे में मुझे यकीन है कि बुद्धिमान लोग काफी जागरूक हैं। और यह केवल मेरा अधिकार नहीं है, बल्कि हर भारतीय का अधिकार है कि वह बहुविवाह जैसे गैरकानूनी एक्ट के खिलाफ खड़ा हो, जिसे वो नेशनल टेलीविजन पर दिखाने में काफी गर्व महसूस करते हैं। बस उन बेचारी महिलाओं के जीवन का मजाक न उड़ाएं, जो इस घटियापन के कारण हर दिन-रात पीड़ित हैं और हर दिन थोड़ा-थोड़ा मरती हैं।

देवोलीना ने कहा कि शहनवाज को नहीं बहुविवाह में रुचि

देवोलीना ने आगे लिखा, या फिर जो मर्जी सो करें। दो पर क्यों रुकें? 2, 4 या 5 शादियां करें। बस समाज में इस बीमारी को न फैलाएं। मैंने जो भी शब्द कहे हैं, उनका मतलब है और मैं अब भी उस पर कायम हूं। और वैसे भी मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं है कि लोग मुझ पर यूट्यूब कंटेंट बना रहे हैं। कृपया सम्मान करें। भले ही मेरा पति मुस्लिम है, लेकिन वह अपनी पत्नी के प्रति बहुत वफादार है, वह बहुविवाह में बिलकुल दिलचस्पी नहीं रखता है और हमें समझने में 4 साल लगे और फिर हमने शादी कर ली। केवल 7 दिनों में नहीं। देवोलीना ने आगे लिखा, साथ ही एक महिला के आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन मैं आपकी भावनाओं को समझ सकती हूं। मुझे पता है कि आप इसे नहीं समझ सकते। ईमानदारी से मुझे आप पर दया आती है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

इंजीनियरिंग कार्य हेतु निविदा सूचना

क्रम सं. (1) ई–निविदा संख्या : DRM-ENGG-BSP-T-66-24-25. दिनांक : 27/06/2024. **कार्य का नाम** : बिलासपुर डिवीजन के सहायक मंडल अभियंता शहडोल के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत बुढार–अमलाई सेक्शन के बीच किमी 883/11–13 पर लेवल क्रॉसिंग संख्या बीके–66 (केवल रेलवे भाग) पर आरओबी का निर्माण। **निविदा मूल्य:** ₹ 13,63,87,668.53/-। **अमानत राशि:** ₹ 8,31,900/- । **कार्य पूर्णता की अवधि :** 12 माह।

क्रम सं. (2) ई–निविदा संख्या : DRM-ENGG-BSP-T-72-24-25. दिनांक : 27/06/2024. **कार्य का नाम** : बिलासपुर मंडल के वरिष्ठ मंडल अभियंता उत्तर के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत शहडोल में 05 डबल बेड कमरों वाले रनिंग रूम का विस्तार और मौजूदा रसोई तथा बेडरूम का उन्नयन का कार्य, एस एस ई ई/जी/उमरिया के लिए कार्यालय भवनों का निर्माण और बैहाटोला (BATL) सी–क्लास स्टेशन पर S&T सेवा भवन का निर्माण। **निविदा मूल्य:** ₹ 1,55,62,866.77/-। **अमानत राशि:** ₹ 2,27,800/- । **कार्य पूर्णता की अवधि :** 12 माह।

निविदा जमा करने की आरंभ तिथि: दिनांक 08–07–2024 से। **निविदा जमा करने की अंतिम तिथि:** दिनांक 22–07–2024 के 11:00 बजे तक।

उपरोक्त ई–निविदा सूचना की पूरी जानकारी www.ireps.gov.in वेबसाइट पर उपलब्ध है। उपरोक्त निविदाओ हेतु ई–टेंडर के अलावा अन्य टेंडर स्वीकार नहीं की जाएगी !

मंडल रेलवे प्रबंधक (अभियंता) सीपीआर/10/127 द.पू.म. रेलवे, बिलासपुर

South East Central Railway @secrail

RO. No.23321/D.06/07/2024

खुला पत्र

देश का चौथा स्तंभ को बचाए कौन ?

» बचा लो चौथे स्तंभ को अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है...जिम्मेदार लोगों से है अपील...

अम्बिकापुर,06 जुलाई 2024 (घटती-घटना)।. बात बिल्कुल सही है कि मीडिया देश की ज़रुरत है,बिना इसके हम स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं कर सकते हैं,संपादक, मालिक और पत्रकार,सभी एक ढर्रे पर चल रहे हैं,सभी बदलाव की बात करते हैं,मगर कोई बदलना ही नहीं चाहता है,देश का स्वघोषित चौथा स्तंभ डगमगा रहा है,अपने विचारों से,अपने कर्तव्यों से बचा लोज्अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है यह कहना गलत नहीं होगा क्योंकि पहले के तीन स्तंभ भी चौथे स्तंभ के लिए गंभीर नहीं है। उन्हें लगता है कि चौथे स्तंभ की जरूरत ही नहीं है? समाचार-पत्र राजनीतिज्ञों और अन्य सत्ताधारियों का सशक्त उपकरण बन गया है,निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए उनका मनमाना प्रयोग करते हैं,सभी अपने अधिकारों की सीमा लांघते हैं मगर क्यों? हमने व हमारे अतीत ने इस बात को सच होते भी देखा है,याद किजिए वो दिन जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था,तब अंग्रेजी हुकूमत के पांव उखाड़ने के लिए एकमात्र साधन अख़बार ही था,विश्व में अमेरिका और कई पश्चिमी देश ऐसे हैं,जहां पत्रकारिता स्वतंत्र है,भारत में भी प्रेस की अपनी भूमिका निभा रही है,हालांकि अन्य देशों की अपेक्षा हमारे देश में प्रेस के लिए कोई अलग से कानून नहीं हैं,हिन्दुस्तान में एक आम नागरिक को जो अधिकार दिया गया है,वही अधिकार प्रेस को भी दिया गया है,आर्टिकल 19(1) (ए) के अनुसार, हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी नागरिकों को अभिव्यक्ति का अधिकार दिया गया है,मीडिया को भी इसी दायरे में रखा गया है,हम आज जिस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं,वो सरकार और मीडिया है,सरकार के बिना मीडिया अधूरी है, और मीडिया के बिना सरकार,देश की समस्याओं को अख़बार या टीवी के माध्यम से मीडिया सरकार तक अपनी बात पहुंचाती है,देखा जाए,तो प्रेस की भूमिका जनप्रतिनिधि की होती है,कई बार ये प्रतिनिधि सीमा को लांघ जाते हैं,नाजी नेताओं ने ठीक ही कहा है कि यदि झूठ को दस या बीस बार बोला जाए,तो वह सच बन जाता है, समाचार पत्रों के संदर्भ में यह कथन सही उतरता है,आज समाचार पत्र राजनीतिज्ञों और अन्य सत्ताधारियों का सशक्त उपकरण बन गया है,वे अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए उनका मनमाना प्रयोग करते हैं,सभी अपने अधिकारों की सीमा लांघते हैं मगर क्यों?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)